पाठ 3. मात्रा बोध

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को मात्राओं का ज्ञान कराना है। बच्चे मात्रा लगे शब्दों को पहचानना तथा मात्रा लगाकर शब्दों को लिखना-बोलना सीख पाएँगे। बच्चों को चित्रों द्वारा भी शब्द पहचानकर मात्रा बोध कराने का प्रयास किया गया है।

अध्यापन संकेत

आ की मात्रा (ा)

बच्चों को बताएँ कि 'अ' स्वर की मात्रा नहीं होती, शेष सभी स्वरों की मात्रा होती है। उन्हें बताएँ, प्रत्येक व्यंजन में स्वर मिला होता है, जैसे – क् + अ = क, ख् + अ = ख आदि। 'आ' की मात्रा का ज्ञान करवाने के लिए उच्चारण करते हुए श्यामपट्ट पर शब्द लिखते जाएँ। जैसे – आ से आम, आ से आग आदि। फिर बच्चों को 'आ' की मात्रा से परिचित करवाएँ। बताएँ कि यह वर्ण के बाद खड़ी पाई की तरह लगाई जाती है। 'आ' की मात्रा के पृष्ठ पर दिए चित्रों की पहचान कराकर उनका नाम बुलवाएँ। जैसे – तारा, बादल, छाता। अब दिए गए 'आ' की मात्रा के शब्दों का उच्चारण उच्च स्वर में अपने साथ-साथ करवाएँ। बच्चों से इन शब्दों की दो-तीन बार दोहराई करवाएँ। 'अ' और 'आ' में अंतर स्पष्ट करने के लिए उच्चारण करवाएँ – अ-आ। शब्दों द्वारा भी अंतर स्पष्ट कीजिए–

तल-ताला, छत-छाता, कल-काला, नल-नाला आदि। 'आ' की मात्रा के अभ्यास के लिए दी गई छोटी-सी कविता का सस्वर वाचन करें तथा फिर बच्चों से करवाएँ। कविता से संबंधित प्रश्न भी पूछ सकते हैं। उदाहरण के लिए – आम कौन लाया? – लाला। आम कैसा था? – ताज़ा। आम लेने कौन-कौन आया? – रमा और राघव। आम काटकर क्या किया गया? – थाल सजाया गया। आदि प्रश्नों द्वारा रोचकता बनाई जा सकती है। बच्चों ने पाठ को कितना समझा यह जानने के लिए पाठ में दिए गए अभ्यास करवाएँ। प्रत्येक बच्चे पर ध्यान दीजिए।